साकार हुआ इण्डस्ट्री का सपना

विशेष क्षेत्र : खाद्व प्रसंस्करण

ग्रामीण उद्यमशील

श्री विक्रम हाड़ा

1557, मेन रोड गली नं0 7, प्रेम नगर, जिला कोटा (राज.)

सम्पर्क सूत्र - 9636375029

प्रारूप

आयु	:	31 वर्ष
शिक्षा	:	10 वीं
प्रशिक्षण	:	सोयाबीन प्रसंस्करण प्रशिक्षण
अनुभव	:	31 वर्ष
सामाजिक मान्यता	:	छोटे उद्वमी के रूप में "भव्या पनीर" उत्पादक के रूप में प्रसिद्ध

तकनीकी विवरण

श्री विक्रम हाड़ा पेशे से कृषक हैं। सोयाबिन की खेती कई वर्षो से कर रहे हैं, परन्तु इस किसान को हमेशा से यह बात परेशान करती थी कि वह अपनी फसल को अधिक दाम में बेचकर मुनाफा कैसे कमाये। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा में कृषकों को दिये जाने वाले तीन दिवसीय सोयाबीन प्रसंस्करण प्रशिक्षण में उत्पादों का मूल्यसंर्वधन व सोया पनीर की जानकारी प्राप्त की। तत्पश्चात् राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत "खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण" में भाग लिया। उन्होंने 4.00 लाख रूपये की लागत से सोया पनीर प्लांट लगाया, आज वह बाजार में 100/- किलो की दर से भव्या सोया पनीर के नाम से बेच रहे हैं। उन्होंने केन्द्र के सहयोग से Food & Safety Standard Act, 2006 के तहत रजिस्ट्रेशन करवा कर अपने उत्पाद का रजिस्ट्रेशन नम्बर भी ले लिया है। वह प्रतिमाह 25.30 क्विंटल सोया पनीर बेचकर, 30,000 से 35,000 रूपये प्रति माह का शुद्ध लाभ कमा रहे हैं।

तकनीकी की उपयोगिता

आज हाड़ौती क्षेत्र में सोयाबीन की पैदावार को देखते हुये सोयाबीन प्रसंस्करण बहुत ही अच्छा उद्योग है। सोयाबीन के विभिन्न उत्पाद जैसे- नट्स, पनीर, दूध, मंगोड़ी इत्यादि बनाये जा सकते हैं। बाजार में तेल व दूध अपनी मजबूत पकड़ बना चुके हैं। परन्तु पनीर एक अनूठा प्रयोग स्वास्थ्य एवं स्वाद की दृष्टि से किया गया है, जिसमें सोयाबीन की पौष्टिकता भी है साथ ही सस्ता होने से इसे उपभोक्ता द्वारा अधिक पसन्द किया जा रहा है।

श्री विक्रम सिंह हाड़ा की सोया प्रसंस्करण इकाई

राजस्थान के राज्यपाल श्री कल्याण सिंह जी द्वारा सोया पनीर का अवलोकन

जब मैं बनी उद्यमी

विशेष क्षेत्र: खाद्य प्रसंस्करण

ग्रामीण उद्वमशील

श्रीमती भंवर कवंर विकाबत

शिवपुरा, कोटा

सम्पर्क सूत्र - 9983323884, 9649033884

प्रारूप

आयु	:	28 वर्ष
शिक्षा	:	8 वीं
प्रशिक्षण	:	खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण
अनुभव	:	1 वर्ष
सामाजिक मान्यता	:	लघु उद्यमी के रूप में घर व समाज में पहचान जिससे आर्थिक स्तर व आत्मविश्वास में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी

तकनीकी विवरण

श्रीमती भंवर कंवर (पत्नी श्री राजेन्द्र विकावत, निवासी शिवपुरा, कोटा) ने कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा, कृषि विश्वविद्यालय, बोरखेड़ा, कोटा पर राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत "खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन" पर आयोजित 30 दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान ही भंवर कंवर प्रतिदिन जो कुछ सिखती थी, उसे दूसरे दिन बनाकर सभी से स्वादिष्टता का प्रतिशत पूछती थी, इस प्रकार वह रोज अचार, मुरब्बा, शर्बत आदि के सैम्पल बनाकर चखवाती थी। प्रशिक्षण उपरान्त निपुण होते ही उन्होंने तुरन्त इसे व्यवसाय के रूप में अपना लिया व मेले, हाट प्रदर्शनी आदि में बिक्री करने लगी, जिससे घर बैठे 10,000 हजार से 15,000 रूपये प्रतिमाह आय होने लगी। इसके पश्चात् उन्होंने खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत FSSI नम्बर ले लिया।

तकनीकी की उपयोगिता

खाद्य प्रसंस्करण एक ऐसा उद्योग है जिससे महिलाऐं घर बैठे वर्ष भर आय का उपार्जन कर सकती हैं। इस उद्योग को कम लागत में शुरू करके अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है।

सांसद श्री ओम बिरला एवं विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जी.एल. केशवा द्वारा प्रसंस्करित उत्पादों पर चर्चा

श्रीमती भंवर कंवर प्रसंस्कृत उत्पादों के साथ

सफलता की कहानी

गाय का कम दूध देने का कारण : ब्याने के पूर्व नहीं खिलाना

ग्राम बडोद तहसील दीगोद जिला कोटा (राज.) की श्रीमती ललिता बाई पत्नि श्री हेम नारायण शर्मा घर में शुद्ध दूध, दही, घी की उपलब्धता एवं घर का खर्च चलाने के लिए गोपालन का व्यवसाय भी करती हैं। इनके पास देशी नस्ल की चार गायें हैं जो ब्यांत में 6-7 माह तक ही मात्र 3.5 ली. से 4.0 ली. प्रतिदिन दूध देती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा संचालित राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत 'गौ प्रबंधन में महिला कौशल उन्नयन' में श्रीमती ललिता बाई की 7 माह की ग्याभिन गाय का चयन कर ब्याने के दो माह पूर्व से ब्याने तक खिलाने हेतु ऊर्जायुक्त खाद्यान्न जिसमें दलिया 140 कि.ग्रा., गुड़ 5 कि.ग्रा., मिनरल मिक्चर 3, कि.ग्रा., मेथीदाना 1 कि.ग्रा., शतावरी 500 ग्रा. एवं अजवाईन 500 ग्राम दिया गया। ब्याने के बाद 10 माह तक 50 ग्राम प्रतिदिन खिलाने हेतु 15 कि.ग्रा. मिनरल मिक्चर, पेट के कीड़े मारने की दवा एलबेण्डाजोल तथा चींचडे मारने की दवा ब्यूटोक्स उपलब्ध करवाई गई। इन सभी के उपयोग के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटा पर गौ प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियों एवं तकनीकी जानकारियों का 2 दिवसीय सघन प्रशिक्षण दिया गया।

परिणाम स्वरूप चयनित गाय ने पिछली ब्यांत में प्रतिदिन 3.5 लीटर दूध दिया था। वही गाय ब्याने के बाद 6 ली. दूध प्रतिदिन दे रही है। इससे उन्हें महसूस हुआ कि उनकी गायों का कम दूध देना का मुख्य कारण ब्याने के पूर्व खाद्यानों की अनुपलब्धता एवं तकनीकी आदानों की जानकारी का अभाव था। केन्द्र की इस योजना से ललिता बाई के परिवार में गौ पालन के प्रति विश्वास बढ़ गया है। अब गांव के आसपास के अन्य किसान भी उनके पास दूध उत्पादन बढ़ाने की सलाह एवं जानकारी लेने आ रहे हैं।

सफलता की कहानी

गांव में रोजगार का श्रेष्ठ साधन - दूध उत्पादन व्यवसाय

कोटा जिले की पीपल्दा तहसील के गांव ढ़ीपरी की श्रीमती द्वारिका बाई पत्नि श्री मुरलीधर मीणा एक लघु कृषक परिवार की महिला है। इनके पास जमीन मात्र 6 बीघा है। जिससे उनके परिवार का पालन-पोषण मुश्किल से हो पाता है। जिसके कारण वह हमेशा कुछ-कुछ नया करने की योजना बनाती रहती थी। चूंकि फसल का पैसा 6 माह मे एक बार हाथ आता है एवं शीघ्र ही खर्च हो जाता है। इसके लिए उन्होंने ऐसा व्यवसाय करने का मानस बनाया जिसमें दैनिक खर्चे के लिए हर समय कुछ न कुछ नकदी रकम इनके पास रह सके। इसके लिए प्रारम्भ से ही दूध उत्पाद व्यवसाय करती थी। लेकिन पशुओं के कम दूध देने एवं दो ब्यांत का अन्तराल ज्यादा होने से दुखी रहती थी। इसी संदर्भ में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. महेन्द्र कुमार गर्ग से चर्चा हुई, चर्चा के दौरान केन्द्र द्वारा संचालित राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत 'गौ प्रबंधन में महिला कौशल उन्नयन' के विषय में विस्तृत जानकारी देकर 7 माह की ग्याभिन गाय का चयन कर ब्याने के दो माह पूर्व से ब्याने तक खिलाने हेतु ऊर्जायुक्त खाद्यान्न, अन्तः एवं ब्राह्य कृमि नाशक दवा एवं ब्याने के 2 माह बाद ग्याभिन कराने की सुविधा की विस्तृत जानकारी दी एवं गौ प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियों एवं तकनीकी जानकारियों का केन्द्र पर 2 दिवसीय सघन प्रशिक्षण दिया।

ब्याने के पूर्व खिलाने से चयनित गाय 1 ली. की जगह 4 ली. दूध प्रतिदिन देने लग गई एवं ब्याने के 2 माह बाद वापस ग्याभिन भी हो गई। इस परियोजना के उपरान्त हमारी समझ में आ गया है कि देशी गाय दूध क्यों नहीं देती है। कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रशिक्षण लेने के उपरान्त हमारी समझ में आ गया कि ब्याने के पूर्व अच्छी खुराक देने एवं ब्याने के बाद संतुलित पशु आहार देसे से का दूध उत्पादन 2 से 3 गुना तक बढ़ाया जा सकता है एवं इस व्यवसाय से घर के सभी सदस्यों को गांव में ही रोजगार से जोड़ा जा सकता है।